# 'दिनकर ' के 'कुरुक्षेत्र' महाकाव्य में युद्ध का समीक्षात्मक अध्ययन

रतनलाल तेली
*सहआचार्य हिन्दी विभाग*
*आर.एन.टी.पी.जी. कॉलेज, कपासन*

हिंदी के महान कवि रामधारी सिंह दिनकर जिन्हें राष्ट्रीय कवि के रूप में जाना जाता है । दिनकर जी की कविताओं में वीर रस एवं ओजगुण ,देशभक्ति एवं क्रांति एवं वीरता की गूंज सुनाई देती है। रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र ' एक प्रबंध काव्य है और कुरुक्षेत्र की रचना **1946** में हुई थी । 'कुरुक्षेत्र' एक विचारात्मक और समस्या प्रधान काव्य है । जो युद्ध और शांति जैसे विषयों पर आधारित है इसे महाकाव्य भी कहा जाता है क्योंकि यह सात अध्यायों में बांटा हुआ है इसमें एक विस्तृत कथा है यह महाकाव्य महाभारत के शांति पर्व से प्रेरित हैं और इसमें मुख्य रूप से भीष्म और युधिष्ठिर के संवाद शामिल है जो युद्ध के नैतिक और दार्शनिक पहलुओं पर विचार करते हैं जहां युधिष्ठिर के पश्चाताप और भीष्म पितामह के उपदेशों के जरिए मनुष्य को कर्मनिष्ठ और न्यायपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी है इसी के संदर्भ में दिनकर जी ने कहा है -

"बहे प्रेम की धार मनुज को
वह अनवरत भिंगोये ।
एक दूसरे के उर में नर
बीज प्रेम के बोये । "
**( कुरुक्षेत्र ; दिनकर ,तृतीय सर्ग, पृष्ठ संख्या - 29)**

अतः उपरोक्त पंक्तियों में दिनकर जी ने मानवतावादी मूल्यों का समर्थन किया है दिनकर जी कहते है - 'कुरुक्षेत्र 'की रचना भगवान व्यास के अनुकरण पर नहीं हुई है और न महाभारत को दुहराना ही मेरा उद्देश्य था
मुझे जो कुछ कहना था, वह युधिष्ठिर और भीष्म का प्रसंग उठाये बिना भी कहा जा सकता था किंतु, तब यह रचना ,शायद ,प्रबंध के रूप में नहीं उतरकर मुक्तक बनकर रह गई होती तो भी यह सच है कि इसे प्रबंध के रूप में लाने की मेरी कोई निश्चित योजना नहीं थी बात यों हुई की पहले मुझे अशोक के निर्वेद ने आकृष्ट किया और 'कलिंग विजय' नामक कविता लिखते - लिखते मुझे ऐसा लगा मानो युद्ध की समस्या मनुष्य की सारी समस्याओं की जड़ है इसी क्रम में द्वापर की ओर देखते हुए मैंने युधिष्ठिर को देखा जो ' विजय 'इस छोटे से शब्द को 'कुरुक्षेत्र' में बिछी हुई लाशों से तोल रहे थे । किंतु यहां भीष्म के धर्म कथन में प्रश्न का दूसरा पक्ष भी विद्यमान था आत्मा का संग्राम आत्मा से और देह का संग्राम देह से ही जीता जाता है यह कथा युद्धांत की हैं युद्ध के आरंभ में स्वयं भगवान ने अर्जुन से जो कुछ कहा था उसका सारांश भी अन्याय के विरोध में तपस्या के प्रदर्शन का निवारण ही था । युद्ध निंदित और क्रूर कर्म है; " इसी संदर्भ में दिनकर जी ने युद्व की निंदा करते हुए इसे क्रूर कर्म बताया है ।

"समर निंद्य है धर्मराज , पर
कहो ,शांति वह क्या है ?
जो अनीति पर स्थित होकर भी
बनी हुई सरला है ? "
(कुरुक्षेत्र; दिनकर ,तृतीय सर्ग , पृष्ठ संख्या - 20 )

दिनकर जी आगे कहते हैं " किंतु उसका दायित्व किस पर होना चाहिए? उस पर जो अनीतियों का जाल बिछाकर प्रतिकार को आमंत्रण देता है? या उस पर जो जाल को छिन - भिन्न कर देने के लिए आतुर है ? पांडवों को निर्वासित करके एक प्रकार की शांति की रचना तो दुर्योधन ने भी की थी ; तो क्या युधिष्ठिर महाराज को इस शांति का भंग नहीं करना चाहिए था ? अतः दिनकर जी युद्ध के संदर्भ में लिखते हैं जैसे -

"कहो ,कौन दायी होगा ,
उस दारुण जग दहन का ।
अहंकार या घृणा ? कौन
दोषी होगा उस रण का ? "
(कुरुक्षेत्र; दिनकर, तृतीय सर्ग , पृष्ठ संख्या - 22 )

दिनकर जी आगे कहते हैं " कुरुक्षेत्र' के भीष्म और युधिष्ठिर ठीक- ठीक महाभारत के ही युधिष्ठिर और भीष्म है यद्यपि मैंने सर्वत्र ही इस बात का ध्यान रखा है कि भीष्म अथवा युधिष्ठिर के मुख से कोई ऐसी बात ना निकल जाए , जो द्वापर के लिए सर्वथा और अस्वाभाविक हो हां, इतनी स्वतंत्रता जरूर ली गई है कि जहां भीष्म किसी ऐसी बात का वर्णन कर रहे हो जो हमारे युग के अनुकूल पड़ती हो उसका वर्णन नये और विशद् रूप से कर दिया जाय कहीं- कहीं इस अनुमान पर भी काम लिया गया है कि इस प्रश्न से मिलते -जुलते किसी अन्य प्रश्न पर भीष्म पितामह का उत्तर क्या हो सकता था ? सच तो यह है कि "यन्न भारते तन्न भारते "की कहावत अब भी खोखली नहीं हुई है जब से मैंने महाभारत में भीष्म द्वारा कथित राजतंत्रहीन समाज एवं ध्वंसीकरण की नीति (स्कॉरच्ड अर्थ पॉलिसी) का वर्णन पढ़ा है, तब से मेरी यह आस्था और भी बलवती हो गई है "(कुरुक्षेत्र ; दिनकर ,निवेदन ,पृष्ठ संख्या - 3 व 4)

दिनकर जी का कहना है कि 'कुरुक्षेत्र 'में युद्ध और शांति जैसे विशद् गंभीर विषय पर अपने विचार भीष्म और युधिष्ठिर के संलाप के रूप में व्यक्त किये हैं ( आधुनिक काव्य सोपान, पृष्ठ संख्या - 29 ,पुनीत प्रकाशन ए -3 ,कांति नगर ,जयपुर - 6 संस्करण 2012 )

दिनकर को इस बात का बोध था कि युद्ध की विभीषिका और उसकी त्रासदी पर बहुत कुछ लिखने की गुंजाइश है हिंसा - अहिंसा ,युद्ध- शांति यथार्थ और आदर्श के जटिल द्वंद वाले इस युग में दिनकर ने इस गंभीर समस्या पर बड़ी गहराई से विचार किया है और ऐतिहासिक - पौराणिक कथा प्रसंगों को आधार बनाकर इसे आधुनिक संदर्भो में प्रस्तुत किया हालांकि 'कुरुक्षेत्र"को पूर्णतः द्वितीय विश्व युद्ध के संदर्भ से जोड़ने की बजाय ब्रिटिश उपनिवेशवादी शोषण अन्य शासन व्यवस्था के विरुद्ध भारतीयों द्वारा फूंकें गए शंखनाद से जोड़ना और अधिक समचीन हो सकता है दिनकर की दृष्टि में किसी का स्वत्व और अनीतिपूर्वक छीन लेना ही युद्ध का सबसे बड़ा कारण है ब्रिटिश साम्राज्य ने भी तो यही किया था अन्याय व अधर्म के नाश के लिए युद्ध उचित है अपने स्वत्व को प्राप्त करने के लिए भी लड़ना आवश्यक है इसी संदर्भ में दिनकर जी ने कहा है -

"स्वत्व मांगने से न मिले
संघात पाप हो जाये,
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिये या कि मिट जाये? "
(कुरुक्षेत्र ; दिनकर , तृतीय सर्ग ,पृष्ठ संख्या - 23 )

उनका मानना है कि मानव समाज में वैयक्तिक और सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर अनेक विकृत प्रवृत्तियां ज्वाला बनकर धधकती रहती है लोभ, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष जैसी कुप्रवृत्तियां ही मनुष्य समाज और राष्ट्र को युद्ध की आग में झोंक देती है जब तक यह विकृतिया सिर उठाती रहेगी तब तक विश्व में अनिवार्यतः युद्ध का तांडव होता रहेगा इसी संदर्भ में दिनकर जी ने कहा है

" युद्ध को तुम निंद्य कहते हो मगर
जब तलक है उठ रही चिंगारियां
भिन्न स्वार्थों के कुलिश संघर्ष की ,
युद्ध तब तक विश्व में अनिवार्य है "
(कुरुक्षेत्र ; दिनकर ,द्वितीय सर्ग ,पृष्ठ संख्या - 17)

"कुरुक्षेत्र की रचना का ताना-बाना द्वितीय विश्व युद्ध और ब्रिटिश साम्राज्यवाद की विभीषिका से तैयार हुआ है विश्व युद्ध में हुआ भयंकर नरसंहार दिनकर को जहां युद्ध के विरोध में खड़ा करता है वहीं उपनिवेशवादी साम्राज्यवादी शासन व्यवस्था के शोषण व अत्याचार से चीखती पुकारती जनता की पीड़ा उन्हें शस्त्र उठाने और युद्ध का शंखनाद करने को प्रेरित करती हैं युद्ध के समर्थन और विरोध का द्वंद्व दिनकर इन शब्दों में व्यक्त करते हैं -

" सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति,
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध हैं।
वासना विषय से नहीं पुण्य उद्भुत होता
वणिज के हाथ की कृपाण ही अशुद्ध है।"

दिनकर का मानना है देश और समाज को युद्ध से बचाने का एक ही उपाय है पूरी व्यवस्था से शोषण व अन्याय का अंत जब तक यह अनीतिपूर्ण व अन्यायी व्यवस्था है युद्ध का खतरा हमेशा बना हुआ है 'कुरुक्षेत्र' का रचनाकाल 1941 से 1946 के मध्य का है यह अवधि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के उस दौर की है जब गांधी के सभी अस्त्र-शस्त्र ,अहिंसा ,दया ,क्षमा आदि लक्ष्य प्राप्ति तक नहीं पहुंच पा रहे थे। आंदोलन में रह-रह कर हताशा और निराशा का भाव व्याप्त हो रहा था अन्यायी शासक साम्राज्यवाद के खिलाफ शक्ति के प्रयोग की बात कर रहा था उनका साफ कहना था कि मानव को मानवता से ही जीता जा सकता है जब पाशविकता हथियार लेकर सामने से प्रहार करती हैं तो मानवीय गुण असहाय हो जाते हैं। अतः दिनकर जी कहते हैं -

"शांति खोलकर खड़ग क्रांति का
जब वर्ज़न करती है,
तभी जान लो, किसी समर का
वह सर्जन करती है। "
(कुरुक्षेत्र ; दिनकर, तृतीय सर्ग ,पृष्ठ संख्या - 22)

दिनकर की सबसे बड़ी विशेषता है देश और युग के सत्य के प्रति जागरूकता कवि देश और काल के सत्य को अनुभूति और चिंतन दोनों स्तरों पर ग्रहण करने में समर्थ हुआ है इसलिए उसकी कविताओं में युग सत्य ,शुष्क चिंतन , सिद्धांत या फार्मूला बनकर नहीं उभरा है सर्वत्र कविता का रूप पा सका है स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात देश में उभरने वाली राजनीतिक, सामाजिक ,विसंगतियों को कवि की तीव्र दृष्टि ने पहचाना तथा पूरे विश्व में उभरने वाले समाजवाद युद्ध और शांति
जैसे प्रश्नों (जिस पर भारत अहिंसा की दृष्टि से विचार करता रहा है) की तड़प का अनुभव किया है इस प्रकार 'दिनकर' की राष्ट्रीयता बहुत गतिशील संश्लिष्ट और उदार हैं उसमें तत्कालिकता परंपरा राष्ट्रीयता , अंतर्राष्ट्रीयता ,मानवता ,भावनाशीलता वैचारिकता का अद्भुत समन्वय है दिनकर ने राष्ट्रीयता को भावनात्मक प्रतिक्रिया से

उबारकर चिंतन परीक्षण तथा आत्मलोचन का स्वस्थ रूप देने का प्रयत्न किया। ( आधुनिक काव्य सोपान )

इस काव्य में युधिष्ठिर के मन में युद्ध के बाद के विषाद और उनके सवालों को दर्शाया गया है और यह न्यायोचित संघर्ष को पुण्य मानता है। जो आत्मा की मुक्ति के लिए आवश्यक हैं इसी संदर्भ में न्यायोचित अधिकारों के बारे में ' दिनकर' ने 'कुरुक्षेत्र' में कहा है ।

"न्यायोचित अधिकार मांगने
से न मिले तो लड़ के,
तेजस्वी छीनते समर को
जीत या कि खुद मरके।"

**(कुरुक्षेत्र; दिनकर ,तृतीय सर्ग, पृष्ठ संख्या - 24)**

'कुरुक्षेत्र' का मुख्य उद्देश्य युद्ध की निरर्थकता और शांति की आवश्यकता को रेखांकित करना है जबकि यह न्याय और अधिकार के लिए संघर्ष की आवश्यकता को भी स्वीकार करता है। 'दिनकर' की रचना 'कुरुक्षेत्र ' का महत्त्व यह है कि यह युद्ध की समस्या पर एक गहन और मौलिक विचार प्रस्तुत करती हैं यह काव्य दिखाता है कि युद्ध हमेशा निंदनीय नहीं होता, बल्कि न्यायोचित अधिकारों की प्राप्ति के लिए यह पुण्य भी हो सकता है दिनकर ने इस रचना में युद्ध की पृष्ठभूमि पर भाग्यवाद की आलोचना करते हुए कर्म और मानवतावाद , सामाजिक न्याय की प्रेरणा दी हैं इस ग्रंथ का ऐतिहासिक धार्मिक दार्शनिक महत्त्व भी हैं इसके अतिरिक्त यह रचना युद्ध की विभीषिका के बाद शांति और न्याय के महत्त्व को दर्शाता है। रामधारी सिंह दिनकर के ' कुरुक्षेत्र 'की साहित्यिक समीक्षा इस प्रकार हैं 'कुरुक्षेत्र ' एक विचारात्मक और मानवतावादी काव्य हैं जिसमें युद्ध और शांति के प्रश्नों पर गहन दार्शनिक विचार प्रस्तुत किए गए हैं यह काव्य युद्ध की निंदा करता है लेकिन साथ ही यह तर्क देता है कि अन्याय और अधिकारों के लिए लड़ा गया युद्ध पाप नहीं बल्कि पुण्य हो सकता है दिनकर के काव्य में साम्राज्यवाद, सामंतवाद और मानवीयता, अन्याय ,अत्याचार ,असंतोष आदि का विरोध किया है

डॉक्टर विश्वनाथ त्रिपाठी ने दिनकर के विषय में लिखा है। " दिनकर में साम्राज्यवाद और सामंतवाद की अमानवीयता विरुद्ध घोर असंतोष और क्षोभ की भावना थी वह एक तरह से अधैर्य के कवि हैं ।"

'कुरुक्षेत्र' के अध्ययन की समीक्षा में महाकाव्य की मुख्य विषय -वस्तु युद्ध और शांति के बीच द्वंद्व न्यायोचित अधिकारों के लिए युद्ध की अनिवार्यता और कर्म के महत्त्व पर प्रकाश डालना है यह रचना महाभारत के ऐतिहासिक प्रसंग का उपयोग कर वर्तमान काल की समस्याओं का चित्रण भी यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती हैं युद्ध और शांति का चिंतन करने वाला काव्य भी है क्योंकि इस काव्य में युद्ध की व्यर्थता और शांति की आवश्यकता पर चिंतन करता है विशेषकर युद्ध के बाद की त्रासदी पर प्रकाश डालता है यह ग्रंथ महाभारत को आधार बनाकर युद्ध के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करता है -

"पर हाय, यहां भी धधक रहा अंबर है ,
उड़ रही पवन में दाहक लोल लहर है ;
कोलाहल- सा आ रहा काल गहर से
तांडव का रोर कराल क्षुब्ध सागर से। "

**(स्रोत - कुरुक्षेत्र ; दिनकर ,पंचम सर्ग पृष्ठ संख्या - 52)**

'कुरुक्षेत्र ' काव्य मानवतावाद का समर्थन करने वाला काव्य है 'कुरुक्षेत्र' में अन्याय, अत्याचार, शोषण का विरोध एवं क्रांति का आह्वान किया है दिनकर जी अनल के कवि हैं जिनका अधिकांश काव्य बलिदान और वीरता का काव्य है अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध क्रांति और विद्रोह करने वाला काव्य है अकर्मण्यता और आलस की रात्रि को नष्ट करके जन-जन में कर्मण्यता शूरता और पराक्रमशीलता के प्रभात को लाने वाला दिवस मणि का दिव्यालोक है दिनकर

लोगों की सोयी चेतना को जागते हुए क्रांति का आह्वान करता है । 'कुरुक्षेत्र' में युद्ध शांति जैसी विकट समस्या को कवि ने युधिष्ठिर एवं भीष्म के कथनों द्वारा प्रश्नात्मक रूप में उठाकर शोषण का विरोध किया है और शोषितों के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए क्रांति का उद्घोष किया है -

" कौन है बुलाता युद्ध ? जाल जो बनाता ?
या जो जाल तोड़ने को क्रुद्ध काल - सा निकालता, "

दिनकर का मानना है कि न्यायपूर्ण अधिकारों की प्राप्ति के लिए युद्ध करना पाप नहीं बल्कि पुण्य है दिनकर जी के काव्य में मानवतावादी एवं प्रगतिशील दृष्टिकोण का चित्रण है दिनकर जी ने दया, ममता ,न्याय ,करुणा ,समता,शांति ,समानता आदि को महत्त्व दिया है रामधारी सिंह दिनकर की रचना ' कुरुक्षेत्र' में मानवतावादी दृष्टिकोण यह है कि मनुष्य को स्वार्थ त्याग कर मानवता के उत्थान के लिए बुद्धि और हृदय का समन्वय करते हुए कार्य करना चाहिए युद्ध के विनाशकारी परिणामों पर सवाल उठता है मानवतावादी समाधान के रूप में सामानता ज्ञान और न्याय ,शक्ति ,सामर्थ्य, पुरुषार्थ को महत्त्व और अन्याय अत्याचार शोषण का 'कुरुक्षेत्र ' में विरोध किया है विश्व की वर्तमान समस्याओं और मानवतावादी दृष्टिकोण के बारें में कवि का कथन है -

"धर्म का दीपक , दया का दीप
कब जलेगा ,कब जलेगा ,विश्व में भगवान ?
कब सुकोमल ज्योति से अभिसिक्त हो,
सरस होंगे जली - सूखी रसा के प्राण ? "
(कुरुक्षेत्र; दिनकर, षष्ठ सर्ग ,पृष्ठ संख्या - 66)

दिनकर जी ने क्षमा ,पुरुषार्थ ,संधि वचन, और शक्ति जैसे गुणों को महत्त्व देते हुए कहा है कि -

"क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो
उसको क्या ,जो दंतहीन,
विष रहित ,विनीत सरल हो ?"
"सच पूछो ,तो शर में ही
बसती है दीप्ति विनय की,
संधि - वचन संपूज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की। "
(कुरुक्षेत्र ; दिनकर , तृतीय सर्ग , पृष्ठ संख्या - 25)

दिनकर का मानना है कि आधुनिक मानव की पहचान उसकी वैज्ञानिक सोच , तर्कशीलता और प्रगतिशील दृष्टिकोण में है जो मानवता के उत्थान के लिए की जानी चाहिए ग्रंथ का संदेश यह है कि समाज में शांति और सुख की स्थापना तभी संभव है जब मनुष्य अपने संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठकर ज्ञान स्नेह और न्याय पर आधारित एक ऐसे विश्व का निर्माण करें जो मानवता के लिए हो। दिनकर जी ने ' कुरुक्षेत्र' में अकर्मण्यता और भाग्यवाद की कड़ी आलोचना की है उनके स्थान पर कर्म पुरुषार्थ को महत्त्व तथा निष्क्रियता और भाग्य पर निर्भरता मानवता की प्रगति में बाधक हैं कवि ने अकर्मण्यता को पाप तथा भाग्यवाद को कायरता बताया है कर्म ही मनुष्य का धर्म है ग्रंथ का केंद्रीय संदेश यह है कि मनुष्य का धर्म यह है कि वह निरंतर कर्म करें और अपने कर्तव्यों का पालन करें, पुरुषार्थ और न्याय पूर्ण युद्ध का समर्थन किया है इस ग्रंथ में युधिष्ठिर एवं भीष्म के संवादों का चित्रण है जहां युधिष्ठिर युद्ध के बाद विषाद से जूझ रहे हैं उन्हें एक वृद्ध और अंधे व्यक्ति (भीष्म ,जो यहां दार्शनिक प्रतीक है) से संवाद करना पड़ता है जो युधिष्ठिर को धर्म अधर्म का संघर्ष ,कर्तव्य और अकर्तव्य,पाप एवं पुण्य के बारे में बताते हैं मनुष्य को अन्याय के विरुद्ध खड़े होने , कर्म करने और और अपने न्यायोचित अधिकारों के लिए संघर्ष करने की

प्रेरणा देता है कवि ने विज्ञान के अंधाधुंध प्रयोग पर चिंता जताई हैं और मनुष्य को विज्ञान का विवेकपूर्ण उपयोग करने की सलाह दी है इसी संदर्भ में कवि ने लिखा है -

" सावधान , मनुष्य ! यदि विज्ञान है तलवार
तो इसे दे फेंक तज कर मोह स्मृति के पार ।
हो चुका है सिद्ध है तू शिशु अभी नादान ;
फूल कांटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार ;
काट लेगा अंग तीखी है बड़ी यह धार । "

**(कुरुक्षेत्र ; दिनकर ,षष्ठ सर्ग ,पृष्ठ संख्या - 71)**

दिनकर जी के बारे में बेनीपुरी जी ने कहा है - "हमारे क्रांति युग का संपूर्ण प्रतिनिधित्व इस समय दिनकर का रहा है क्रांतिवादी को जिन-जिन हृदय मंथनों से गुजरना होता है दिनकर जी की कविता उसकी सच्ची तस्वीर रखती है । " द्वितीय विश्व युद्ध **(1939** से **45)** की समाप्ति के बाद 'कुरुक्षेत्र' का प्रकाशन **1946** में हुआ ' दिनकर ' ने इसमें भीष्म और युधिष्ठिर जैसे मिथकीय प्रतीकों का प्रयोग करते हुए 'कुरुक्षेत्र' युद्ध के माध्यम से सांकेतिक रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के कारण और परिणाम की चर्चा की है साथ ही भविष्य में मानव सभ्यता युद्ध न करें इसके समाधान पक्ष को भी बताया है इसमें 'दिनकर 'ने मुख्यतः यह बताने का प्रयास किया है की युद्ध की समस्या मनुष्य की सारी समस्याओं की जड़ है प्रथम सर्ग में युद्ध के बाद 'कुरुक्षेत्र 'की वीभत्स स्थिति और युधिष्ठिर के मोह और शोक का वर्णन किया गया है। द्वितीय सर्ग में युधिष्ठिर के मन में उठने वाले प्रश्न और युद्ध के औचित्य पर सवाल है जैसे -

"धर्मराज संन्यास खोजना
कायरता है मन की ,
है सच्चा मनुजत्व ग्रंथियां
सुलझाना जीवन की ।"

तृतीय सर्ग में दिनकर विज्ञान और तकनीक पर टिप्पणी करते हैं वह मानते हैं कि मानव का श्रम तब तक व्यर्थ हैं जब तक उसका सही उद्देश्य ज्ञात न हो चतुर्थ सर्ग में मनुष्य के धर्म और कर्म के बीच के संबंधों की व्याख्या की गई है पंचम सर्ग में समाज में युद्ध के बाद की स्थिति का चित्रण करता है जिसमें समाज में फैले विनाश और पीड़ा को दिखाया गया है। षष्टम सर्ग में इसमें महाभारत और वर्तमान समाज के बीच संबंधों की चर्चा है जो बताता है कि महाभारत की पीड़ा आज भी समाज में मौजूद है। सप्तम सर्ग यह सर्ग शांति के महत्त्व और न्यायपूर्ण अधिकारों की प्राप्ति हेतु युद्ध के औचित्य पर जोर देता है । युधिष्ठिर आत्मग्लानि की भावना से ग्रसित हैं। और युद्ध का जिम्मेदार स्वयं को मानते हैं भीष्म उनको समझाते हुए कहते हैं कि युद्ध का जिम्मेदार तो दुर्योधन है क्योंकि उसने अन्याय किया है 'दिनकर' जी ने कहा है जैसे -

"चुराता न्याय जो रण को बुलाता भी वही है ,
युधिष्ठिर स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है ;
नरक उनके लिए जो पाप को स्वीकारते हैं ,
ना उनके लिए जो रण में उसे ललकारते हैं। "

भीष्म कहते हैं कि अन्याय को सहना कायरता है और अनैतिकता भी हैं यदि दुश्मन युद्ध लड़ने के लिए आ गया हो तो युद्ध करना नैतिक हो जाता है' दिनकर ' का कथन है जैसे -

"और समर तो और भी अपवाद हैं चाहता कोई नहीं इसको मगर ; जूझना पड़ता सभी को शत्रु जब आ गया हो द्वार पर ललकारता। "

'दिनकर ' मार्क्सवाद से प्रभावित थे अतः मार्क्सवाद विचार के अनुसार दिनकर भी वर्ग संघर्ष का समर्थन करते हैं कारण यह है कि मार्क्सवाद के अनुसार शोषण पर टिकी हुई शांति युद्ध से बुरी अवस्था है क्योंकि उसमें वंचित व्यक्ति संघर्ष करने तक की स्थिति में नहीं रहता है। इस रचना में

'दिनकर ' साम्यवाद की स्थापना की कल्पना करते हैं और कहते है कि -

"जब तक मनुज - मनुज का यह सुख भाग नहीं सम होगा। शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा ।"

'दिनकर' के अनुसार जब समाज में सभी व्यक्तियों के बीच संपत्ति का वितरण समान रूप से होगा और विज्ञान का प्रयोग मानवता के हित में होगा तब युद्ध की समस्या का समाधान होगा । समग्रतः उपयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि 'कुरुक्षेत्र 'में मानव समाज में व्याप्त युद्ध की समस्या और उसके समाधान पक्ष को 'दिनकर ' ने मानवतावादी दृष्टिकोण के माध्यम से प्रतिपादित किया है और इसके लिए दिनकर ने मार्क्स के वर्ग संघर्ष और साम्यवादी विचार, गीता के कर्मवाद और गांधीवाद जैसे मानवतावादी विचारों का सहारा लिया है।

(स्रोत - कुरुक्षेत्र ; रामधारी सिंह दिनकर)

वर्तमान और आधुनिक संदर्भ में 'कुरुक्षेत्र 'का युद्ध दर्शन सटीक और विशद् व्याख्या करने वाला ग्रंथ है क्योंकि वर्तमान समय में युद्ध की विभीषिका और परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्र कभी भी विनाश लीला रच सकते हैं ।अमेरिका द्वारा जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम का हमला इसका एक उदाहरण है ।

वर्तमान समय मे रूस - यूक्रेन और इजराइल - फिलिस्तीन के युद्धों में भीषण तबाही हुई है अतः युद्ध किसी भी समस्या का हल नहीं हो सकता है और उसे मानवीय दृष्टिकोण और बातचीत के जरिए ही सुलझाया जा सकता है 'कुरुक्षेत्र 'के युद्ध और शांति दर्शन की तुलना आज के वैश्विक संघर्षों और परमाणु युद्ध के साथ सटीक बैठती है जो युद्ध के नैतिक व दार्शनिक पहलुओं पर विचार करता है इस ग्रंथ में वीर रस ओज गुण और राष्ट्रीय गौरव का भी स्वर दिखाई देता है। यह रचना द्वितीय विश्व युद्ध के संदर्भ में लिखी गई थी जब युद्ध की भयावहता का अनुभव कवि के मन में ताजा था आज भी जब युद्ध और संघर्ष की समस्याएं बनी हुई है 'कुरुक्षेत्र'की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है और यह युद्ध शांति के शाश्वत प्रश्नों पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करती हैं इसमें आधुनिक युग की राजनीति षड्यंत्र,अराजकता ,संघर्षपूर्ण स्थितियां ,स्वार्थयुक्त राजनीति ,कुचक्र, भ्रष्टाचार ,अन्याय ,अत्याचार ,शोषण विभिन्न सामाजिक समस्याओं की भी आलोचना की गई है और राष्ट्रीय एकता पर बल दिया गया है यह महाकाव्य युवा पीढ़ी को केवल क्षुद्र स्वार्थ को छोड़कर बुद्धि और हृदय में समन्वय स्थापित करने तथा मानवता के उत्थान में जुटने के लिए प्रेरित करता है महाभारत का युद्ध केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं बल्कि मानव सभ्यता के आंतरिक संघर्ष का प्रतीक है यह ग्रंथ युद्ध के कारणों और परिणामों पर सवाल उठता है और मानवता को युद्ध के बजाय न्याय शांति व सद्भाव का रास्ता अपनाने का संदेश देता हैं इसमें यह विचार किया गया है कि अन्याय और शोषण के विरुद्ध न्याय संगत अधिकारों की प्राप्ति के लिए युद्ध करना पाप नहीं बल्कि एक पुण्य कर्म है संक्षेप में यह ग्रंथ अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह करने की तथा मनुष्य को कर्मनिष्ठ और न्यायपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है न्याय के लिए संघर्ष शांतिपूर्ण समाधान की खोज विज्ञान के विवेकपूर्ण उपयोग, अन्याय के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा में है ।

दिनकर की रचना 'कुरुक्षेत्र' भविष्य के लिए यह सुझाव देती है कि न्याय और समानता के लिए युद्ध आवश्यक हो सकता है लेकिन यह युद्ध केवल कर्म और समर्थ के आधार पर होना चाहिए कवि का मानना है कि व्यक्ति को भाग्यवाद को छोड़कर कर्म करना चाहिए और शोषण मुक्त समाज के निर्माण के लिए विषमताओं को दूर करना चाहिए यह रचना कर्म और न्याय को महत्त्व देती हैं कवि के अनुसार न्यायोचित अधिकारों की प्राप्ति के लिए युद्ध करना पाप नहीं बल्कि पुण्य है । भाग्यवाद का त्याग का सुझाव देती है कवि कहता है कि व्यक्ति के पास जो प्रज्ञा

और सामर्थ्य है उसका सही दिशा में उपयोग करके ही समाज को स्वर्ग बनाया जा सकता है शोषण मुक्त समाज 'कुरुक्षेत्र' एक ऐसे समाज का सपना देखता है जहां सभी प्रकार की विषमताएं समाप्त हो गई हो । कवि का मानना है मानव धर्म दीन दुखियों की सहायता करके उनके जीवन से अंधकार को दूर करना है विनाशकारी युद्ध का विश्लेषण यह है ग्रंथ युद्ध की समस्या पर गहराई से विचार करता है और यह स्पष्ट करता है कि युद्ध विनाशकारी तो है लेकिन वह वह न्याय की रक्षा के लिए आवश्यक भी हो सकता है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि 'कुरुक्षेत्र 'एक एक विचारात्मक और समस्या प्रधान काव्य हैं जो युद्ध दर्शन व शांति जैसे विषयों पर आधारित है जो युद्ध दर्शन में युद्ध के औचित्य एवं उसके कारणों परिणामों कर्मवाद ,मानवतावाद धर्म व कर्म विज्ञान के विवेकपूर्ण उपयोग पाप व पुण्य के संघर्ष ,शांति ,समता ,पुरुषार्थ ,दया, करुणा आदि मानवीय गुणों को महत्व देने वाला काव्य है अतः संक्षेप में यह काव्य युद्ध की समीक्षा की सटीक व विशद् व्याख्या एवं विश्लेषण करने वाला काव्य है।

संदर्भ स्त्रोत ;


कुरुक्षेत्र ; दिनकर , राजपाल एंड सन्स ,कश्मीरी गेट दिल्ली - 6

कुरुक्षेत्र ; दिनकर ,निवेदन, पृष्ठ संख्या - 3

कुरुक्षेत्र ; दिनकर ,तृतीय सर्ग ,पृष्ठ संख्या - 29 ,22 ,23 ,24 ,25 दिनकर , निवेदन , पृष्ठ संख्या - तीन व चार

आधुनिक काव्य सोपान , पुनीत प्रकाशन ए - 3 कांति नगर, जयपुर 6 संस्करण (2012 ) पृष्ठ संख्या - 29

कुरुक्षेत्र ; दिनकर , द्वितीय सर्ग पृष्ठ संख्या - 17

कुरुक्षेत्र ; दिनकर , पंचम सर्ग पृष्ठ संख्या - 52

कुरुक्षेत्र ; दिनकर , षष्ठ सर्ग पृष्ठ संख्या - 66 वे 71

कुरुक्षेत्र ; दिनकर ,सप्तम सर्ग पृष्ठ संख्या - 89

स्रोत - कुरुक्षेत्र ; दिनकर

दिनकर रामधारी सिंह ; (2004) कुरुक्षेत्र ,नई दिल्ली राजपाल एंड सन्स, पृष्ठ संख्या - 23 व 25

दिनकर रामधारी सिंह (1975) रश्मिरथी, पटना - 16 उदयाचल , पृष्ठ संख्या - 15

गुप्त मन्मथ नाथ ; ( 1980) आलेख प्रकाशन

रायगोपाल ; (24 अप्रैल 1975) ' राष्ट्रकवि ' दिनकर , पटना ग्रंथ निकेतन

दिनकर रामधारी सिंह ; (2002) ' हुंकार' राजेंद्र नगर पटना - 16 ,उदयाचल , पृष्ठ संख्या - 18 ,38 ,39

रामधारी सिंह दिनकर ; आधुनिक बोध नेशनल पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली (1989) ,पृष्ठ संख्या - 37

दिनकर रचनावली, खंड - 5 पृष्ठ संख्या - 354

नंदकिशोर नवल दिनकर रचनावली, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद( 2011 ) खंड 3 ,पृष्ठ संख्या - 791

सावित्री सिन्हा संपादक दिनकर ; राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली (1967) पृष्ठ संख्या - 35

कुरुक्षेत्र ; पृष्ठ संख्या - 87

दिनकर के काव्य में परंपरा और आधुनिकता, पृष्ठ संख्या - 165

दिनकर ' रेणुका' पृष्ठ संख्या - 32

डॉक्टर सुनीति दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना, पृष्ठ संख्या - 59 एवं 60

कुरुक्षेत्र ; रामधारी सिंह दिनकर बीसवां संस्करण (1961) पृष्ठ संख्या - 80

दिनकर काव्य में युग चेतना डॉक्टर पुष्पा ठक्कर अरविंद प्रकाशन, बम्बई ,प्रथम संस्करण (1986) पृष्ठ संख्या -138


---